(पृष्ठ १८ का शेष...)

शरीर बना है। इसमें से एक रजकण भी पृथक् हो, वह पुद्गल की शुद्ध पर्याय है।

अब कहते हैं कि उसमें षट्गुणीहानिवृद्धि होती है तथा वह एकसमय की पर्याय सादि-सांत है। अर्थात् वह पर्याय नई उत्पन्न होती है और उसका व्यय भी होता है; किन्तु परद्रव्य से निरपेक्ष होने से अर्थात् परद्रव्य से उसका संबंध नहीं होने से उसे शुद्ध कहते हैं। वह अपनी दशा है, इसलिये सद्भूत है और एकसमय का अंश होने से व्यवहार है।

प्रश्न ह्न इसमें नय का क्या काम है ?

उत्तर ह्न नय का ज्ञान तो होना ही चाहिये। द्रव्य किसका विषय है, पर्याय किसका विषय है ह्न यह तो जानना ही चाहिये। परमाणु जो कि त्रिकाली परमपारिणामिकभाव है, वह निश्चयनय का विषय है, जबकि पर्याय व्यवहारनय का विषय है।

प्रश्न ह्न व्यवहारनय के विषय में परमपारिणामिकभाव कहाँ से आया ?

उत्तर ह्न जो यह परमाणु की पर्याय है, वह उसी की है या नहीं ?

वह परमाणु पारिणामिकभाव है और उसकी पर्याय पारिणामिकभाव की पर्याय है ! इसलिये उसे पारिणामिकभाव की पर्याय होने से पारिणामिकभावस्वरूप कहा है। यद्यपि वह पर्याय होने से सद्भूत व्यवहारनय का विषय हो गई; तथापि है तो वह पारिणामिकभाव की ही पर्याय।

परमाणु में उदय, उपशम, क्षयोपशम और क्षायिकभाव नहीं है, इसलिये उसको पारिणामिकभाव कहा है। अहा ! सूक्ष्म बात है बापू ! वीतराग-सर्वज्ञ परमात्मा द्वारा कथित मार्ग को समझना बहुत कठिन है, उसको समझे बिना सब व्यर्थ है, भले ही खूब बाह्य क्रिया करे तो भी चारगति के चक्कर मिटनेवाले नहीं है।

अब गाथा के दूसरे भाग की बात आती है ह्न ये जो परमाणु इकट्ठे हुये हैं, वे स्कन्ध हैं, पिण्डरूप हैं और स्वजातीय बंधरूप अर्थात् एक परमाणु का दूसरे परमाणु के साथ एकरूप रहना ह्न इस लक्षण से लक्षित होने के कारण अशुद्ध हैं अर्थात् विभाव है। गाथा में विभाव शब्द आया है, जबकि टीका में अशुद्ध शब्द का प्रयोग किया है। पुद्गल पर्याय परमाणु में शुद्ध है और यदि वह स्कन्धरूप होवे तो अशुद्ध है ह्न ऐसे पुद्गल पर्याय के दो प्रकार हैं। इसीतरह भगवान आत्मा रागादिरूप होवे तो वह अशुद्ध है और वह स्वभाव में रहे तो शुद्ध है ह्न ऐसी बात है। ●

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 27 302 अंक : 2

आतम अनुभव करना रे भाई

आतम अनुभव करना रे भाई ।। टेक।।

जबलौं भेद-ज्ञान नहिं उपजै, जीवन मरन दुख भरना रे।
आतम अनुभव करना रे भाई।।1।।

आतम पढ़ नवतत्त्व बखानै, व्रत - तप- संजम धरना रे।
आतम ज्ञान बिना नहिं कारज, जोनी संकट परना रे।।
आतम अनुभव करना रे भाई।।2।।

सकल ग्रंथ दीपक हैं भाई, मिथ्यातम के हरना रे।
कहा करैं ते अन्ध पुरुष को, जिन्है उपजना-मरना रे।।
आतम अनुभव करना रे भाई।।3।।

'द्यानत' जे भवि सुख चाहत हैं, तिनको यह अनुसरना रे।
'सोऽहं' ह्न ये दो अक्षर जपकै, भवजल पार उतरना रे।।
आतम अनुभव करना रे भाई।।4।।

ह्न कविवर पण्डित द्यानतरायजी

पुद्गल का विशेष स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 27 वीं गाथा के बाद समागत 41 वें कलश पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। कलश मूलत: इसप्रकार है ह्न

(मालिनी)

अथ सति परमाणोरेकवर्णादिभास्वन्
निजगुणनिचयेऽस्मिन् नास्ति मे कार्यसिद्धि:।
इति निज हृदि मत्त्वा शुद्धमात्मानमेकम्
परमसुखपदार्थी भावयेद्भव्यलोक: ॥41॥

यदि परमाणु एकवर्णादिरूप प्रकाशते (ज्ञात होते) निजगुण समूह में हैं तो उसमें मेरी कोई कार्यसिद्धि नहीं है अर्थात् परमाणु तो एक वर्ण, एक गंध आदि अपने गुणों में ही है तो फिर उससे मेरा कोई कार्य सिद्ध नहीं होता ह्न इसप्रकार निजहृदय में मानकर, परमसुख पद का अर्थी भव्यसमूह एक शुद्ध आत्मा को भाये।

(गतांक से आगे...)

भगवान आत्मा अकेला नित्यानन्द प्रभु है। शरीर की क्रिया जड़ है तथा वाणी की क्रिया भी जड़ है। राग की क्रिया होती है, उसमें भी मैं नहीं हूँ और उस राग को जाननेवाली एकसमय की ज्ञानपर्याय जितना भी मैं नहीं हूँ।

देखो ! यहाँ शुद्धात्मा को भजने की बात की है; निमित्त का भजन नहीं, राग का भजन भी नहीं तथा पर्याय का भजन भी नहीं; यहाँ तो भव्यसमूह एक शुद्धात्मा को, त्रिकालध्रुव आनन्दकन्द को भावे अर्थात् शुद्धात्मा में एकाग्र हो ह्न ऐसा कहते हैं।

अज्ञानी कुगुरु तो कहते हैं कि हमारी भक्ति करो तो तुम्हारा कल्याण हो जायेगा, हमको मानो तो कल्याण होगा; परन्तु यहाँ वीतराग प्रभु ने उससे इन्कार किया है। वीतराग प्रभु तो कहते हैं कि हमारी भक्ति करोगे तो भी तुमको राग ही होगा; अत: तुम अपने चैतन्यस्वभाव के सन्मुख होकर, बस उसी में एकाकार हो जाओ ह्न यही धर्म है और यही मुक्ति का उपाय है। गजब बात है भाई !

इसप्रकार यह 27 वीं गाथा और उसके बाद 41 वाँ कलश पूर्ण हुआ। अब आगे पुद्गल पर्याय के स्वरूप का कथन करने वाली नवीन गाथा कहते हैं ह्न

अण्णाणिरावेक्खो जो परिणामो सो सहावपज्जाओ।
खंध सरूवेण पुणो परिणामो सो विहावपज्जाओ।।२८।।

अन्यनिरपेक्ष परिणाम स्वभावपर्याय है और स्कन्धरूप परिणाम विभावपर्याय है।

परमाणु पर्याय पुद्गल की शुद्धपर्याय है और परमपारिणामिकभावस्वरूप है। वह वस्तु में होनेवाली छहप्रकार की हानि-वृद्धिरूप है, अतिसूक्ष्म है, अर्थपर्यायात्मक है और सादि-सान्त होने पर भी परद्रव्य से निरपेक्ष होने के कारण शुद्धसद्भूतव्यवहार नयात्मक है अथवा एकसमय में उत्पाद्व्ययध्रौव्यात्मक होने से सूक्ष्मऋजुसूत्रनयात्मक है। स्कन्धपर्याय स्वजातीय बंधरूप लक्षण से लक्षित होने के कारण अशुद्ध है।

यह परमाणु की व्याख्या है। इसमें जड़ परमाणु का स्वतंत्रपना बताते हैं कि यह परमाणु तेरे (जीव के) कारण नहीं है; अपितु परमाणु अपने गुण-पर्याय के कारण है तथा तू भी उसके कारण नहीं है; तू तेरे गुण-पर्याय के कारण रहता है।

जो यह एक पृथक् रजकण-परमाणु है, वह पुद्गल की शुद्धपर्याय है। अहा ! जो परमाणु स्कन्ध में शामिल है, यदि वह पृथक् होवे तो वह परमाणु की पर्याय परमपारिणामिकभावस्वरूप पुद्गल की शुद्धपर्याय है।

प्रश्न ह्न आत्मा में तो पाँचभाव हैं, इसलिये उसमें पंचमभाव लिया जा सकता है, परन्तु परमाणु में तो पूर्व के चार भाव ही कहाँ हैं जो उसमें पंचमभाव लिया जाये ?

उत्तर ह्न भाई ! पंचमभाव का अर्थ यह है कि जैसे जीव में त्रिकाली भाव है, वैसे ही परमाणु में भी त्रिकाली भाव है। अर्थात् आत्मा के त्रिकाली भावरूप पंचमभाव की तरह परमाणु में भी त्रिकाली भाव है ह्न ऐसा यहाँ कहना है। देखो ! यहाँ तो परमाणु की पर्याय को भी परमपारिणामिक भाव कहा है।

परमाणु की पर्याय नई उत्पन्न होती है और उसका नाश होता है अर्थात् परमाणु पर्याय सादि-सांत होने पर भी वह पर की अपेक्षा रहित है और इस कारण परमाणु की वह अकेली पर्याय शुद्ध है। तथा वह अस्तित्व धारण करती है, इसलिये सद्भूत है और एक समय की पर्याय होने से व्यवहारनयस्वरूप है।

यहाँ कहते है भाई ! यह देह तो अनेक रजकणों का पिण्ड है, ये देह कोई आत्मा नहीं है तथा ये देह कोई एक चीज नहीं है, अपितु यह तो बहुत रजकण इकट्ठे होकर

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

छहढाला प्रवचन

मिथ्यात्वादि के त्याग का उपदेश

ऐसे मिथ्यादृगज्ञानचरण, वश भ्रमत भरत दुःख जन्म मरण।
तातैं इनको तजिये सुजान, सुन तिन संक्षेप कहूँ बखान।।१।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे ...)

मैं ज्ञान हूँ ह्न यह भूलकर, राग मैं हूँ, शरीर मैं हूँ - ऐसी मिथ्याबुद्धि का होना संसार का मूल है। ऐसे मिथ्यात्वभाव सहित जानपना मिथ्याज्ञान है और मिथ्यात्व सहित आचरण मिथ्याचारित्र है।

शरीर अजीव है; मिथ्यात्व-पुण्य-पाप आस्रव है; इन अजीव और आस्रव को अपना मानना या हितकर मानना मिथ्याश्रद्धा है। मैं जीव तत्त्व हूँ, स्वयं ज्ञानरूप हूँ - ऐसा भूलकर अपने को देह अथवा अजीव मानना मिथ्यादर्शन है।

उसीप्रकार रागादि आस्रव को जीवस्वभाव मानना या उसको संवर-निर्जरा का कारण मानना भी मिथ्यादर्शन है। मिथ्यादृष्टि जीव सातों तत्त्वों के सम्बन्ध में कैसी भूल करता है ? यह आगे दिखायेंगे।

जीव, अजीव आदि सातों तत्त्व भिन्न-भिन्न स्वरूपवाले हैं। जीव ज्ञानस्वरूप है, शरीरादि अजीव है। अजीव का काम जीव से भिन्न है। अजीव शरीरादि में जो जीव का काम माने, उसने जीव-अजीव को भिन्न नहीं जाना; किन्तु एक माना। भिन्न-भिन्न तत्त्वों को एक मानना मिथ्यात्व है।

हिंसादि पापभाव एवं दयादि शुभभाव - ये दोनों भाव शुद्धजीव का स्वरूप नहीं है, किन्तु आस्रव हैं और बन्ध अर्थात् दुःख का कारण है; ऐसा होने पर भी उनको ज्ञान के साथ एकमेक मानना अथवा उनमें से किसी को सुख का कारण समझना मिथ्यात्व है। जैसे ज्ञान और अजीव भिन्न हैं; वैसे ही ज्ञान और आस्रव भी भिन्न हैं।

ज्ञानमय जीव और रागादिरूप आस्रव - ये दोनों अलग-अलग हैं, उनको अलगरूप पहिचानना चाहिए। इसप्रकार तत्त्वों को पहिचानकर विपरीत मान्यता छोड़ देना चाहिए; क्योंकि विपरीत मान्यतारूप मिथ्यात्व महादुःख का कारण है और सबसे बड़ा पाप है।

वचन व देह आदि की क्रिया जीव की नहीं है; अजीव की है। आठों कर्म अजीव हैं; जड़ कर्म जीव को दुःख नहीं देता, किन्तु जीव अपने विपरीत भाव से (मोह से) दुःखी होता है। जड़ के पास सुख-दुःख है ही कहाँ, जो वह जीव को दे? जीव के सुख-दुःख का कारण तो जीव में ही है। वर्ण-गन्धवाला रूपी जड़-अचेतन पुद्गल - क्या उसमें सुख या दुःख है ? - नहीं है। आत्मा अतीन्द्रिय आनन्द से भरपूर चैतन्य भगवान है, वह अपने आपको भूलकर विपरीत भाव से दुःखी होता है। और अपने स्वभाव को पहिचानकर उसमें एकाग्रता से सुखी होता है। अतएव सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र संवर हैं और सुख का कारण है। अपने दुःख या सुख परिणाम का कर्ता जीव स्वयं ही है; अन्य कोई नहीं।

भाई ! तुम तो जीव हो, घर-पैसा-शरीर आदि सब अजीव हैं; अजीव को, अपना मानना मिथ्यात्व है, अज्ञान है और चार गति के महान दुःखों का कारण है ह्न यह जानकर उसको छोड़ो। जड़ का संयोग तुमको सुख या दुःख का कारण नहीं है, वह तो पर वस्तु है। दुःख अपने में और उसका कारण पर में - यह कैसे हो सकता है ? दुःख अपने में है तो उसका कारण भी अपने में ही है और उसे मिटाने का उपाय भी अपने में ही है, बाहर में नहीं है; परन्तु अज्ञानी अपनी भूल न देखकर बाह्य में दूसरे को दुःख का कारण समझता है और उसके ऊपर द्वेष करता है; किन्तु दुःख दूर करने का वास्तविक उपाय नहीं करता। यदि अपने मिथ्यात्वादि विपरीत भाव को दुःख का कारण समझे तो सम्यग्दर्शनादि भावों के द्वारा उसको दूर करने का उद्यम करे।

शरीर ही मैं हूँ, अतएव शरीर की प्रतिकूलता में मुझे दुःख और शरीर की

अनुकूलता में मुझे सुख होता है ह्न ऐसी अज्ञानी की बुद्धि है; यह अजीव को जीव माननेरूप मिथ्यात्व है। ऐसा तो नहीं है कि शरीर का निरोग रहना सुख, और शरीर में रोग होना सो दुःख; शरीर जीव को न तो कुछ मदद करता है और न कुछ रुकावट करता है। सातवीं नरक पृथ्वी की प्रतिकूलता के बीच में भी जीव सम्यग्दर्शन पा लेता है, उसमें उसको प्रतिकूलता की आड़ कहाँ आई? वैसे मिथ्यादृष्टि को भी किसी संयोग का विघ्न नहीं हैं, किन्तु देहबुद्धि का विपरीत भाव ही विघ्नकारी है। बाह्य साधन की जो बुद्धि है, वही उसको अन्तर्मुख नहीं होने देती।

यदि अन्तर में मैं ज्ञान स्वरूप हूँ - ऐसा लक्ष करे तो बाह्य में प्रतिकूलता होते हुए भी सम्यग्दर्शनादि हो सकता है और बाह्य में सब तरह की अनुकूलता होने पर भी यदि जीव स्वयं अंतरलक्ष न करे तो सम्यग्दर्शन नहीं होता। अपने में ही जब ताकत न हो तो दूसरा क्या करे?

भाई ! देहादि संयोगों से भिन्न तुम तो जीवतत्त्व हो; किन्तु मिथ्यात्ववश अपना निजरूप भूलकर रुल रहे हो और जन्म-मरण के बहुत दुःख सह रहे हो। अब ये दुःख मिटाने के लिये संयोग की ओर देखना छोड़कर अपने स्वभाव के सन्मुख देखो, तुम चेतनरूप हो।

देखो, सुगम भाषा में कितनी सरस बात समझायी है। कैसी अच्छी हित की बात है? मोक्षार्थी जीव को यह बात समझकर, दुःख के कारणरूप मिथ्यात्वादि को छोड़ना चाहिए और सुख के कारणरूप सम्यक्त्वादि का ग्रहण करना चाहिए।

सुःख-दुःख कोई दूसरे के कारण से नहीं है; परन्तु मेरे भाव से ही मुझे सुख-दुःख है - ऐसा जानकर सम्यक्त्वादि भाव की उपासना करना और मिथ्यात्वादि भाव का त्याग करना ह्न ऐसा उपदेश है।

अब जीवादि तत्त्वों का सच्चा स्वरूप कैसा है और उनकी पहचान करने में जीव कैसी भूल करता है? ह्न यह दिखाते हैं। "**इनको तजिये सुजान**" अच्छी तरह से भूल को जान करके उसको छोड़ने के लिये उसका स्वरूप दिखाते हैं, जिससे दुःख मिटे और सुख होवे। ●

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : यदि आत्मस्वभाव सुख का सागर है तो वर्तमान में उस सुख का अंश भी अनुभव में क्यों नहीं आता ?

उत्तर : आत्मा सुख का सागर होने पर भी उसने अनादिकाल से राग में एकत्व बुद्धि बना रखी है; इसलिये स्वभाव से सुखांश प्रगट नहीं होता। राग के साथ एकत्व बुद्धि का धागा तोड़कर उसमें भेदज्ञान करे तो स्वभाव में से सुखांश प्रगट हो।

प्रश्न : आत्मवस्तु तो अव्यक्त है, फिर जानने में कैसे आवे ?

उत्तर : वर्तमान में वर्तती पर्याय व्यक्त है ह्न प्रगट है। वह पर्याय कहाँ से आती है ? कोई वस्तु है, उसमें से आती है या कहीं अधर में से आती है ? तरंग पानी में से आती है या फिर कहीं अधर में से आती है ? उसी भाँति पर्याय अधर में से नहीं आती; अपितु वस्तु अव्यक्त-शक्तिरूप है, उसमें से आती है। व्यक्त पर्याय अवयक्त आत्मशक्ति को व्यक्त करती है ह्न उसका अस्तित्व बताती है।

प्रश्न : ज्ञान सो आत्मा ह्न ऐसा कहकर मात्र ज्ञान के द्वारा ही आत्मा की पहचान क्यों कराई ? जीव का मूल प्रयोजन तो आनन्द को प्राप्त करना है न ?

उत्तर : आत्मा को पहचानने के लिये, ज्ञान सो आत्मा ह्न इसप्रकार कहा है। इसका कारण यह है कि ज्ञान तो प्रगट अंश है, वर्तमान में विद्यमान है और आनन्द का अंश प्रगट नहीं है, प्रगट तो आकुलता है; इसलिये ज्ञान के प्रगट अंश द्वारा ही आत्मा की पहचान कराई है। ज्ञान के प्रगट अंश को अन्दर में लगाये अर्थात् एकाग्रता करे तो जिसप्रकार द्रव्य और गुण शुद्ध हैं, उसीप्रकार पर्याय भी शुद्ध हो जाती है। आत्मा को ज्ञान के अंश से पहचान कराने का मूल हेतु यही है।

प्रश्न : समयसार सर्वविशुद्धज्ञानाधिकार का मांगलिक करते हुये आचार्यदेव ने कहा है कि आत्मा का द्रव्यस्वभाव शुद्ध-शुद्ध है। यहाँ शुद्ध-शुद्ध दो बार प्रयोग करने का क्या आशय है ?

उत्तर : प्रथम तो परद्रव्य से भिन्न होने के कारण शुद्ध है और द्वितीय राग से भी भिन्न होने के कारण शुद्ध है। बंध और मोक्ष के विकल्पों से दूरीभूत है। एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय पर्यन्त समस्त पर्यायों से आत्मस्वभाव अत्यंत दूर है; अत: आत्मस्वभाव शुद्ध-शुद्ध है ह्न सम्पूर्णत: ही शुद्ध है।

समाचार दर्शन ह्न

३१ वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ३१ वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर दिनांक ३ अगस्त से १२ अगस्त, २००८ अनेक मांगलिक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

रविवार, दिनांक ३ अगस्त को कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त श्री बाबूभाई एम. दोशी कडियादरा के करकमलों से ध्वजारोहण पूर्वक हुआ। प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ ने किया। मंच उद्घाटन कर्त्ता श्री जमनालालजी कैलाशचन्दजी सेठी परिवार जयपुर थे। शिक्षण-शिविर का उद्घाटन श्री अजितभाई मीठालाल मेहता अहमदाबाद परिवार ने किया।

शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी के दोनों समय प्रवचनों के साथ-साथ पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, डॉ.दीपकजी जैन जयपुर एवं पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ के प्रवचन हुये।

प्रतिदिन चलनेवाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा दृष्टि का विषय, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा क्रमबद्ध पर्याय, पण्डित मनीषजी शास्त्री द्वारा (ब्र.जतीशचन्दजी के सान्निध्य में) छहढाला एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी युगल के सी.डी. प्रवचन एवं महाविद्यालय की छात्र विद्वान प्रवचन के उपरान्त विशिष्ट व्याख्यानों में डॉ. अशोकजी गोयल दिल्ली, डॉ. मुकेशजी शास्त्री विदिशा, डॉ. नरेन्द्रजी जैन जयपुर डॉ. अरविन्दजी शास्त्री सुजानगढ, डॉ. धनकुमारजी भवानीमंडी, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री, पण्डित प्रकाशचन्दजी ज्योतिर्विद मैनपुरी एवं पण्डित अमितजी शास्त्री गुना आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात: ५.३० बजे चलनेवाली प्रौढ कक्षा में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना, पण्डित मानमलजी जैन कोटा, पण्डित कमलचन्दजी जैन पिडावा, पण्डित सुरेशचन्दजी टीकमगढ, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर के अवसर पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पूर्व डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया के निर्देशन में बाल कक्षा एवं 'प्रमाणज्ञान' विषय पर युवाओं की कक्षा संचालित की गई।

शिविर के मध्य २७ नवीन पुस्तकों का विमोचन हुआ।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रतनदेवी पाटनी व सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी कोलकाता, श्री नरेशजी जैन अहमदाबाद,

श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा तथा श्री नवीनचन्द केशवलालजी मेहता मुम्बई थे।

प्रात: चौबीस तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधान के आमंत्रणकर्ता श्री बाबूलालजी पंचाली थांदला इन्दौर, श्री प्रवीणचन्दजी शाह जयपुर, श्री शिखरचन्दजी सर्राफ विदिशा, श्री केशवचन्दजी सुधांशु जैन कुरावली, स्व. विमलचन्दजी एवं स्व. ऋषभकुमारजी जैन की स्मृति में बडकुल परिवार विदिशा, श्री खुशालचन्द जैन सर्राफ खिमलासा, श्री रतनलालजी मेहता नातेपुते एवं श्री अमोलकचन्दजी जैन गुना थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

दिनांक १० अगस्त को श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट सलाहकार समिति का अधिवेशन रखा गया, जिसकी अध्यक्षता श्री सुमनभाई दोशी, राजकोट ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजितभाई बडौदा मंचासीन थे। संचालन श्री महीपालजी जैन ने किया।

शिविर में विशिष्ट गणमान्य अतिथियों के रूप में श्री बसन्तभाई दोशी, श्री अमृतभाई मेहता, श्री पूनमचन्दजी सेठी, श्री अशोकजी पाटनी (आर.के.मार्बल्स), श्री प्रेमचन्दजी बजाज, श्री पदमचन्दजी पहाडिया, श्री अभिनन्दनप्रसादजी, श्री बीनूभाई, श्री अश्विनभाई, श्री सुमनभाई दोशी आदि शिविर में पधारे।

सभी कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली, श्री महापालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

शिविर में लगभग १५०० लोग लाभान्वित हुये। लगभग ४० हजार रुपये का साहित्य बिक्री हुआ एवं १ लाख ५० हजार रुपयों के साहित्य का ऑर्डर बुक किया गया। डॉ. भारिल्ल एवं अन्य विद्वानों के ४५ हजार घण्टों के प्रवचन डी.वी.डी एवं सी.डी. के माध्यम से घर-घर पहुँचे। ●

जैन जगत में पहली बार

जयपुर (राज.) : यहाँ शिविर के मध्य दिनांक 8 अगस्त, 08 को डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया द्वारा बच्चों के लिये निर्मित '**नो टाइम पास सीरीज**' का भव्य विमोचन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ़, श्री कैलाशचंदजी सेठी जयपुर एवं श्री दिलीपजी भाई मुम्बई द्वारा किया गया।

नो टाइम पास सीरीज में 'बच्चे खेलेंगे खेल और सीखेंगे तत्त्वज्ञान' पर आधारित तीन गेम्स हैं। 1. **No Time Pass**, 2. लगे रहो जीवराज एवं 3. **Our Life**। ये सभी गेम्स ह्न लूडो, साँप सीढ़ी के पैटर्न पर आधारित आकर्षक गेम्स हैं। इन्हें खेलने से जैनदर्शन के गूढ़ सिद्धान्तों के ज्ञान की गारंटी है। इन्हें बड़े भी बच्चों के साथ खेल सकते हैं । प्राप्ति के लिये सम्पर्क करें ह्न

1. दिव्यध्वनि प्रचार-प्रसार ट्रस्ट, ए ह्न 1704, गुरुकुल टॉवर, जे. एस. रोड़, दहीसर (वेस्ट), मुम्बई ह्न 68, फोन ह्न02228943250, मोबाइल ह्न 98821927322

2. श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए ह्न 4, बापूनगर, जयपुर -15 फोनह्न0141-2707458/2705581, मो. ह्न 9829273655

सम्पादक संघ की नवीन कार्यकारिणी गठित

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के अध्यक्ष श्री रवीन्द्र मालव ने कार्यकारिणी का गठन निम्नप्रकार किया।

संरक्षक ह्न सर्व श्री स्वदेशभूषण जैन दिल्ली, डॉ. हुकमचंद भारिल्ल जयपुर, श्रीमती सरयू दफ्तरी मुम्बई, **परामर्शदाता ह्न** श्री नरेन्द्रप्रकाश जैन फिरोजाबाद, श्री नीरज जैन सतना, श्री कपूरचंद पाटनी गोहाटी, प्रा. लीलावती जैन जलगांव, डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल अमलाई, श्री मिलापचंद डंडिया जयपुर, **अध्यक्ष ह्न** श्री रवीन्द्र मालव ग्वालियर, **कार्याध्यक्ष ह्न** डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा कोलकाता, श्री विजयकुमार जैन मुम्बई, **उपाध्यक्ष ह्न** श्री नरेन्द्रकुमार जैन अजमेर, डॉ. नीलम जैन गुड़गांव, डॉ. शेखरचंद जैन अहमदाबाद, श्री सतीश जैन दिल्ली, **महामंत्री ह्न** श्री अखिल बंसल जयपुर, डॉ. नरेन्द्र भारती सनावद, डॉ. ज्योति जैन खतौली, डॉ. महेन्द्र मनुज इन्दौर, **संयुक्त मंत्री ह्न** श्री नवनीत जैन मेरठ, **संगठन मंत्री ह्न** ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर, **प्रचार मंत्री ह्न** श्री अकलेश जैन अजमेर, **कोषाध्यक्ष ह्न** श्री महेन्द्रकुमार पाटनी जयपुर, **सदस्य ह्न** माणिकचंद पाटनी इन्दौर, सुरेशचंद जैन बारौलिया आगरा, भरत इन्दरचंद पापड़ीवाल औरंगाबाद, प्रवीन जैन लोनी, विराग शास्त्री जबलपुर, ओ. के. जैन दिल्ली, रमाकांत जैन लखनऊ, प्रो. माणकचंद जैन उदयपुर, श्री प्रमोद पण्डित सांगली, श्री शांतिनाथ के. होतपेटे हुबली।

परिचय एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री महावीर विद्यानिकेतन, नेहरू पुतला में दिनांक ६ जुलाई को जैन समाज के प्रतिभाशाली छात्रों का सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन चौधरी, मुख्य अतिथि श्री जयकुमारजी मिर्जापुर तथा विशिष्ट अतिथि श्री शिखरचंद भगवानदास मोदी, श्री आदिनाथजी नखाते, श्री घनश्यामजी मेहता आदि थे।

विद्यालय के अधीक्षक पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री ने विद्यालय का परिचय एवं उद्देश्यों की जानकारी दी। तत्पश्चात् ट्रस्ट द्वारा विद्यालय के छात्रों को अध्ययन किट प्रदान की गई। पुरस्कार वितरण में श्री सुभाष गिरीश मोदी, श्री सोनू जयचंद मोदी, श्री हसमुखलालजी पुणे का विशेष सहयोग मिला। कार्यक्रम का संचालन प्राचार्य श्री विरागजी शास्त्री जबलपुर ने किया।

ऋषभायतन में शिलान्यास समारोह सम्पन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ दिनांक १८ जुलाई, ०८ को श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट पुरानी मंडी अजमेर के अंतर्गत वैशालीनगर अजमेर स्थित निर्माणाधीन अध्यात्मधाम ऋषभायतन में नवनिर्मित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के अंतर्गत मनोहारी वेदियों, शिखरों एवं मानस्तम्भ का भव्य शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ।

विधान एवं शिलान्यास विधि ब्र. पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली एवं इनके सहयोगी पण्डित सुनील धवल भोपाल, पण्डित सुबोध शास्त्री शाहगढ़ ने सम्पन्न करायी गई।

इस प्रसंग पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित देवेन्द्रजी सिंगोड़ी एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला।

फैडरेशन का राज. प्रान्तीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण सम्पन्न

मदनगंज-किशनगढ (राज.) : यहाँ आर.के.कम्यूनिटी सेन्टर में दिनांक २० जुलाई, ०८ को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन-राजस्थान प्रान्त का पहला कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर आर. के. कम्यूनिटी में आयोजित सभा के मुख्यअतिथि श्री पुखराजजी पहाड़िया-पूर्व जिला प्रमुख एवं भाजपा पंचायत प्रदेश प्रकोष्ठ के अध्यक्ष थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष श्री उत्तमचन्दजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल-मुम्बई, राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल-जयपुर, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री प्रदीपजी चौधरी-किशनगढ, महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया-मुम्बई, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री पीयूषजी शास्त्री-जयपुर, प्रदेश महामंत्री श्री राजकुमारजी शास्त्री-बांसवाड़ा एवं श्री भागचन्द चौधरी-किशनगढ मंचासीन थे।

अधिवेशन में जयपुर, उदयपुर, कोटा, अलवर, अजमेर, भरतपुर, बांसवाड़ा, भीलवाडा आदि स्थानों से पधारे लगभग २०० पदाधिकारियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण का प्रथम सत्र परिचय सम्मेलन के रूप में रखा गया, जिसमें सर्व प्रथम प्रदेशाध्यक्ष श्री उत्तमचन्दजी भारिल्ल एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री प्रदीपजी चौधरी का स्वागत भाषण हुआ। प्रदेश उपाध्यक्ष (उदयपुर संभाग) श्री महावीरप्रसादजी शास्त्री, प्रदेश उपाध्यक्ष (जयपुर संभाग) श्री संजीवकुमारजी गोधा, प्रदेश उपाध्यक्ष (अलवर संभाग) श्री अजीतजी शास्त्री, प्रदेश उपाध्यक्ष (कोटा संभाग) श्री रतनचन्दजी शास्त्री व प्रदेश प्रचार-मंत्री श्री गणतंत्रजी शास्त्री ने अपने-अपने क्षेत्र से पधारे पदाधिकारियों एवं अपने क्षेत्र में संचालित की गई फैडरेशन की गतिविधियों का परिचय दिया।

द्वितीय सत्र में राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, राष्ट्रीय महामंत्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल एवं राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठ की संयोजिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया-मुम्बई ने पूरे राजस्थान से पधारे फैडरेशन के क्षेत्रीय पदाधिकारियों को फैडरेशन की कार्यप्रणाली संबंधी प्रशिक्षण दिया।

इसी प्रसंग पर बांसवाड़ा जिला प्रभारी पण्डित रीतेशजी शास्त्री डडूका ने बांसवाडा जिले की नव-गठित कार्यकारिणी की घोषणा की।

अन्त में प्रदेश महामंत्री पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने प्रशिक्षण के लिये पधारे सभी पदाधिकारियों एवं व्यवस्थापकों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा श्री भागचन्दजी चौधरी ने आगन्तुकों के प्रति कृतज्ञता एवं आभार प्रदर्शन किया। ज्ञातव्य है कि सम्पूर्ण आयोजन तथा अतिथियों की सर्व व्यवस्था राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री प्रदीपजी चौधरी परिवार द्वारा की गई।

सम्पूर्ण गतिविधियों का एवं मंच का सफलतम संचालन राज.प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

परिचय सम्मेलन सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री दि.जैन मंदिर जग्गा की बावड़ी में २७ जुलाई को श्री टोडरमल दि.जैन सि.महाविद्यालय में नवीन प्रवेश प्राप्त विद्यार्थियों का परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात: ७ बजे जिनेन्द्र पूजन के साथ हुआ। फिर स्वल्पाहार के उपरान्त सभी नवागन्तुक छात्रों ने मंच पर आकर अपना परिचय देते हुये व महाविद्यालय में आने के स्वयं के निर्णय को सार्थक बताते हुये अपने आप को गौरवान्वित बताया।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, श्री कैलाशचन्दजी सेठी ने छात्रों के लिये अपना मार्मिक उद्बोधन दिया।

अन्य विशिष्ट अतिथियों में श्री दिलीपभाई मुम्बई, श्री शांतिलालजी जैन अलवर, श्री ताराचन्दजी सौगाणी, श्री महावीरप्रसादजी सरावगी कोलकाता, पण्डित रमेशचन्दजी दाऊ, श्री सुमतिजी लूणदिया आदि मंचासीन थे।

समारोह में महाविद्यालय के अनेक स्नातक विद्वान भी उपस्थित थे।

अन्त में पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने भूतपूर्व विद्यार्थियों के परिचय के अतिरिक्त जग्गा की बावड़ी क्षेत्र का परिचय देते हुये सभी का आभार प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम का आयोजन/संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों ने किया।

फैडरेशन की बाँसवाड़ा जिले की ह्न

नवीन कार्यकारिणी का गठन

किशनगढ़ : यहाँ दिनांक २० जुलाई को आयोजित एकदिवसीय राजस्थान प्रान्तीय प्रशिक्षण के दौरान प्रदेशाध्यक्ष ह्न डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल, प्रदेश महामंत्री ह्न पण्डित राजकुमारजी जैनदर्शनाचार्य, प्रदेश प्रभारी ह्न पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, प्रदेश प्रचार मंत्री ह्न पण्डित गणतंत्रजी 'ओजस्वी' के सानिध्य में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की बाँसवाड़ा जिले की नवीन कार्यकारिणी के गठन की घोषणा बाँसवाड़ा जिला प्रभारी ह्न पण्डित रितेश जैन द्वारा की गई। नवीन कार्यकारिणी निम्नानुसार है ह्न

जिलाध्यक्ष ह्न श्री वीरेन्द्र ज्ञायक बाँसवाड़ा, **उपाध्यक्ष** ह्न पण्डित प्रमोद शास्त्री जौलाना व पण्डित मोहित शास्त्री अरथूना, **महामंत्री ह्न** पण्डित आकाश शास्त्री डडूका, **कोषाध्यक्ष ह्न** पण्डित आशीष शास्त्री अरथूना, **सह-कोषाध्यक्ष ह्न** पण्डित निमेष शास्त्री घाटोल, **प्रचारमंत्री ह्न** पण्डित सुदीप शास्त्री घाटोल, **संगठनमंत्री ह्न** पण्डित संजयकुमार परतापुर, **सह-संगठनमंत्री** ह्न पण्डित मनोज शास्त्री डडूका, **सांस्कृतिक मंत्री ह्न** पण्डित अश्विन नानावटी नौगामा, **सह-सांस्कृतिक मंत्री** ह्न पण्डित प्रीतेश शास्त्री रैयाना, **प्रवक्ता ह्न** श्री सुनील शाह बाँसवाड़ा।

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

१. भीण्डर (राज.) : यहाँ अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर दिनांक १० से १८ जुलाई, ०८ तक सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित अश्विनजी नानावटी तथा पण्डित विवेकजी सागर द्वारा ली गई कक्षाओं व प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। इसी अवसर पर विद्वानद्वय के अथक प्रयासों से नवीन अखिल भारतीय जैन महिला फैडरेशन का गठन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य भी आप दोनों विद्वानों के निर्देशन में सम्पूर्ण समाज के सहयोग से सम्पन्न किये गये।

२. ग्वालियर – मुरार (म. प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पण्डित अंकित शास्त्री लूणदा एवं रात्रि में पण्डित अजितजी अचल, पण्डित शुद्धात्मजी शास्त्री एवं पण्डित विनीतजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। प्रतिदिन जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् पण्डित नीलेश शास्त्री द्वारा बालकक्षा ली गई व अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

विधान के समस्त कार्यक्रम अंकित शास्त्री एवं नीलेश शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये। कार्यक्रमों में पण्डित सुनीलजी शास्त्री एवं पण्डित अनुराजजी शास्त्री का विशेष सहयोग रहा।

३. लूणदा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित गजेन्द्र शास्त्री के तीनों समय मोक्षमार्ग प्रकाशक व समयसार पर हुये प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ साथ ही रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

४. खतौली (उ. प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर बाबा भागीरथजी वर्णी द्वारा संस्थापित १००८ श्री पद्मप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर कानूनगोयान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री राकेशकुमारजी जैन-अम्बर पैलेस थे। ध्वजारोहण श्री प्रवीणकुमारजी महलकेवालों ने किया।

इस अवसर पर डॉ. योगेशचंदजी अलीगंज एवं पण्डित अनुराग शास्त्री के प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। इस प्रसंग पर स्मारक ट्रस्ट को लगभग १४,००० रुपये की दानराशि प्राप्त हुई।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम स्थानीय विद्वान सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित संदीपजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये ।

रात्रि में वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

५. कुंथलगिरि (महा.) : पर्व के अवसर पर हिंगोली से लगभग ८० लोगों का यात्रा संघ कुंथलगिरि पहुँचा। जिन्होंने आठ दिन तक पण्डित कमलचन्दजी जैन पिडावावालों के सान्निध्य में नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया।

इस अवसर पर प्रतिदिन चारों समय पण्डितजी के मोक्षमार्ग प्रकाशक, तत्त्वार्थसूत्र, छहढाला एवं ज्ञानानन्द श्रावकाचार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि वहाँ से लौटते समय पण्डित के तीन प्रवचन सोलापुर इंजिनियरिंग कॉलेज में तथा एक प्रवचन घाटकोपर-मुम्बई में भी हुआ।

नये युग की आध्यात्मिक क्रांति का उदय

इन्दौर (म. प्र.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के भूतपूर्व स्नातक विद्वान पण्डित सौरभ शास्त्री एवं पण्डित गौरव शास्त्री द्वारा इन्दौर से दिनांक १२ जून से १२ सितम्बर, ०८ तक इन्टरनेट विडियो कॉन्फ्रेन्सिंग व फोन द्वारा प्रत्येक शनिवार को सायं ७:३० से ८:३० तक छहढाला की कक्षा आयोजित की जा रही है। यू.एस., यू. के., कनाड़ा सहित अन्य देशों में करीब १२५ मुमुक्षु इसका लाभ ले रहे हैं।

इसमें सौरभजी, गौरवजी द्वारा तैयार पावर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन तैयार कर सभी मेम्बर्स को भेजी जाती है, बाद में उसी के माध्यम से अध्ययन कराया जाता है। सभी ढालों की ऑनलाइन परीक्षा भी आयोजित की जायेगी। भारत के मुम्बई शहर में विडियो कॉन्फ्रेन्सिंग द्वारा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित क्रमबद्धपर्याय की कक्षा का संचालन सफलतापूर्वक दिनांक २२ जुलाई, ०८ से प्रारम्भ हो चुका है। भारत तथा विश्व के किसी भी देश से इन कक्षाओं का लाभ लेने हेतु सम्पर्क करें ह्न **फोन ह्न** (0731) 2410540, 09329796325

E-Mail : jainsaurabhjain15@gmail.com /dparihantsaurabh@yahoo.co.in

नोट ह्न कक्षायें हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं में आयोजित की जा रही हैं।

वैराग्य समाचार

१. पीसांगन निवासी श्रीमती आयचुकीबाई ध.प.श्री ताराचंदजी पहाड़िया का दिनांक 2 जुलाई, 08 को देहावसान हो गया। इस दौरान पण्डित अजयजी शास्त्री के 12 भावनाओं पर प्रवचन हुये एवं दिनांक 14 जुलाई को पण्डित अमितजी शास्त्री लुकवासा द्वारा पुखराजजी पहाड़िया के सान्निध्य में शांति विधान का आयोजन किया गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान को 1100 रुपये की राशि प्राप्त हुई है।

२. नागपुर निवासी श्री विश्वलोचनजी जैनी के बड़े भाई **श्री निर्मलकुमारजी जैनी** का ७९ वर्ष की आयु में ३० जून को देहावसान हो गया है। आप मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष थे तथा अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुडे हुये थे।

३. सहारनपुर निवासी पं. श्री देवचंदजी का चिलकाना में ८७ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप सहारनपुर के सरकारी कॉलेज में संस्कृत के लेक्चरर थे एवं लगभग २५ वर्ष से टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से प्रवचनार्थ जाया करते थे। गुरुदेवश्री के सानिध्य में भी आप लगभग २५ वर्ष तक सोनगढ जाते रहे । ज्ञातव्य है कि आप पण्डित विमलकुमारजी जैन जलेसरवालों के नानाजी थे।

4. अलवर निवासी श्री पवनकुमारजी जैन (सी. ए.) ट्रस्टी श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट अलवर का दिनांक 28 जुलाई,08 को देहावसान हो गया। आप कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी थे। आपने नवनिर्मित श्री रत्नत्रय दि. जिनमंदिर निर्माण हेतु भूमि प्रदान करने से लेकर मंदिर निर्माण तक तन-मन-धन से अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया था।

दिवंगत आत्मायें शीघ्रही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 4 सितम्बर 08 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 16 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 16 अगस्त 08 तक हमारे पास 503 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 18 अगस्त 2008 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 443 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। ध्यान रहे, इनमें 214 स्थानों पर तो श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक एवं वर्तमान छात्र विद्वान ही प्रभावनार्थ जा रहे हैं। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ह्न

विशिष्ट विद्वानों में ह्न 1.कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा **2.मुम्बई (सीमंधर जिनालय-भारतीय विद्या भवन) :** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर **3.जयपुर (टोडरमल स्मारक) :** पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर **4.रतलाम :** पण्डित पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर **5.ग्वालियर (मुरार) :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर **६.सोनागिर :** पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि **7.अशोकनगर :** डॉ.उत्तमचंदजी जैन सिवनी **8.बीना :** पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन **9.मुम्बई (दादर) :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद **10.दिल्ली (विश्वासनगर) :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियाँधाना **11. कोटा (रामपुरा) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर **12. जबलपुर :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली **13.इन्दौर (साधना नगर) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियाँधाना **14.छिन्दवाड़ा :** ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' **15. भोपाल (कोहेफिजा) :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली **16.इन्दौर (शक्कर बाजार) :** पण्डित कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल **17. कोलकाता :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर **18.मुम्बई (भायन्दर) :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन **19.विदिशा (किलाअन्दर) :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा **20. मुम्बई (बोरीवली) :** पं. शैलेशभाई तलोद **21. बेसवा वि.विद्यालय :** पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर **22.अलीगढ :** पण्डित अशोकजी लुहाडिया मंगलायतन **23. जयपुर (आदर्शनगर, महावीर नगर) :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ।

विदेश में ह्न 1. लंदन : पण्डित विपिनजी शास्त्री श्योपुर।

मध्यप्रदेश प्रान्त ह्न 1. **इन्दौर (पलासिया) :** पं. अनिलजी शास्त्री भिण्ड 2. **उज्जैन :** पं. अनुभवप्रकाशजी कानपुर 3. **गुना (वीतराग-विज्ञान) :** ब्र. कल्पना बहन जयपुर 4. **भोपाल (चौक) :** पं. धनसिंहजी पिड़ावा 5. **भिण्ड (परमागम मंदिर) :** पं. प्रद्युम्नकुमारजी मुज्जफरनगर 6. **टीकमगढ़ :** पं. राजीवजी भिण्ड 7. **बदरवास :** पं. वीरेन्द्रवीर फिरोजाबाद 8. **ग्वालियर (फालका बाजार) :** पं. मनोजजी जबलपुर 9. **गड़ाकोटा :** पं. सुरेशचन्दजी भिण्ड 10. **कोलारस :** पं. पीयूषजी शास्त्री जयपुर 11. **सागर (महावीर जिनालय):** पं. प्रवीणजी शास्त्री जयपुर 12. **ग्वालियर (माधवगंज) :** पं. कान्तिकुमारजी पाटनी इन्दौर 13. **ग्वालियर (सोडा का कुआँ) :** पं. सुरेशजी टीकमगढ़ 14. **इन्दौर (साधना नगर) :** पं. महेन्द्रजी खनियाँधाना 15. **भोपाल (कस्तूरबानगर) :** पं. सतीशजी पिपरई 16. **बेगमगंज :** पं. राजेशजी शिवपुरी 17. **खुरई :** पं. अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई 18.**द्रोणगिरी :** पण्डित

कोमलचंदजी जैन टडा 19.**खनियांधाना :** पं. संजयजी सेठी जयपुर 20. **केसली :** पं. अभयजी बदरवास 21. **जावरा :** पं. नेमीचन्दजी ग्वालियर 22. **भिण्ड (देवनगर) :** पं. अरूणजी बानपुर 23. **सिलवानी :** पं. संजयजी साव खनियाँधाना 24. **बण्डा :** पं. पुष्पेन्द्रजी बानपुर 25. **चन्देरी :** पं. नरेन्द्रजी जबलपुर 26. **अम्बाह :** पं. कैलाशचन्दजी बानपुर 27. **जबेरा :** पं. अशोकजी सिरसागंज 28. **करेरा :** पं. भगवतीप्रसाद शहाबाद 29. **मौ (बड़ा मन्दिर) :** पं. मनोजजी करेली 30. **शहडोल :** पं. आशीषजी भिंड 31. **भोपाल (पिपलानी) :** पं. सन्मति मोदी खनियाँधाना 32. **छिन्दवाड़ा :** ब्र. सुनीलजी शिवपुरी 33. **शाहगढ़ :** पं. रमेशचन्दजी 'दाऊ' जयपुर 34. **सागर (तारण-तरण) :** पं. तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर 35. **शिवपुरी (शान्तिनाथ मन्दिर) :** पं. राजेन्द्रजी शिवपुरी 36. **शिवपुरी (वीरसागर कॉलजी) :** पं. विजयजी शिवपुरी 37. **अभाना :** पं. मुरारीलालजी नरवर 38. **इन्दौर (गांधीनगर) :** पं. लालारामजी साहु अशोकनगर 39. **इन्दौर (नन्दानगर) :** पं. मधुभाई जलगाँव 40. **इन्दौर (माणकचौक) :** पं. दिलीपजी बाकलीवाल 41. **देपालपुर (इन्दौर) :** पं. पदमजी गंगवाल इन्दौर 42. **मन्दसौर (गोल चौराहा) :** पं. अमितजी बीना (मौवाले) 43. **रन्नौद :** पं. शान्तिलालजी काला भिण्ड 44. **गोरमी :** पं. कैलाशचन्दजी अशोकनगर 45.**गंजबसौदा :** पं. चित्तरंजनजी छिन्दवाड़ा 46. **बीड :** पं. संजयजी बड़ामलहरा 47. **बनखेड़ी :** पं. सरदारमलजी बेरसीया 48. **गुना (बाजार मन्दिर) :** पं. शान्तिलालजी सोगाणी 49. **ग्वालियर (दानाओली) :** पं. पवनकुमारजी मौ 50. **मन्दसौर (कालाखेत) :** पं. महेशजी ग्वालियर 51. **मण्डलेश्वर :** पं. धीरजजी जबेरा 52. **चन्दला :** पं. निखलेशजी दलपतपुर 53. **शाजापुर :** पं. सतीशजी कासलीवाल 54. **हरदा :** वि. कुसुमलताजी हरदा 55.**दमोह (तारण-तरण) :** पं. सुरेन्द्रजी 'पंकज' छिन्दवाड़ा 56. **सिरोंज :** पं. अरूणजी 'ठगन' टीकमगढ़ 57. **शुजालपुर मण्डी :** पं. सीलचन्दजी जैन जबेरा 58. **शुजालपुर सिटी :** पं. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन 59.**गौरझामर :** पं. संजयजी (इंजि.) खनियांधाना 60. **मौ (बड़ा मन्दिर) :** पं. मनोजजी शास्त्री करेली 61. **निसईजी :** पं. पुष्पाबहन होशंगाबाद 62. **मकरोनिया (सागर) :** पं. अजितजी मडवैया 63. **खरगोन :** पं. प्रमोदजी जैन सागर **६४. गुना :** पं. राजकुमारजी शास्त्री खनियांधाना **६५. कटनी :** पं. संतोषजी शास्त्री दमोह **६६. विदिशा :** डॉ. विनोदजी शास्त्री चिन्मय **६७. गुना :** पं. सुरेशजी शास्त्री कोलारस **६८. गुना :** पं. अनिलजी शास्त्री **६९. सोनागिरि :** डॉ. मुकेशजी शास्त्री तन्मय, **७०. सोनागिरि :** पं. अशोकजी शास्त्री रायपुर **७१. सोनागिरि :** पं. चैतन्यजी शास्त्री खडैरी **७२. छिन्दवाड़ा :** पं. ऋषभजी शास्त्री **७३. नौगाव :** पं. शीतलकुमारजी शास्त्री गुडर **७४. लिधौरा :** पं. राकेशजी शास्त्री 75. **धामनोद :** पं. सचिनजी शास्त्री जबेरा 76. **पोरसा :** पं. गणतंत्रजी शास्त्री बाँसवाड़ा 77. **सुखाजी :** पं. कपूरचन्दजी (भायाजी) सागर 78. **ग्वालियर :** पं. विनीतजी शास्त्री ग्वालियर 79. **नरवर :** पं. आशीषजी शास्त्री चिनौआ 80. **रांझी (जबलपुर) :** पं. गजेन्द्रजी शास्त्री भिण्डर 81. **कुचड़ौद :** पं. निलेशजी शास्त्री मुहारी 82. **आरोन :** पं. विशेषजी शास्त्री बड़ामलहरा 83. **निसईजी :** पं. सजलजी शास्त्री, जयपुर 84. **ग्वालियर :** विकासजी खनियांधाना 85. **ग्वालियर :** पं. अनुराजजी फिरोजाबाद 86. **घुवारा :** पं. जीवनजी शास्त्री 87. **भोपाल :** पं. अंकुरजी शास्त्री दहेगांव 88. **भोपाल :** पं. तन्मयजी शास्त्री खनियांधाना 89. **भोपाल :** पं. चैतन्यजी शास्त्री खडैरी 90. **भोपाल :** पं. नितिनजी शास्त्री खडैरी 91. **मगरौन :** पं. हेमचन्दजी दमोह 92. **होशंगाबाद :** पं. अभिषेकजी मंगलायतन 93. **शहापुर :** पं. विनोदजी मकरोनिया 94. **सिवनी :** पं. विपुलजी शास्त्री सागर 95. **रतलाम स्टेशन :** पं. फूलचन्दजी मुक्कीरवार हिंगोली 96. **बड़ागाँव :** पं. सुधीर शास्त्री 97. **शहापुरा भिटोनी :** पं. राहुलजी नौगाँमा 98. **नागदा जं.:** पं. सोमिलजी शास्त्री जयपुर 99. **सिल्लोडी :** पं. दीपकजी शास्त्री जयपुर 100. **दुर्ग :** पं. राहुलजी शास्त्री जयपुर 101. **महिदपुर :** पं. कपिलजी शास्त्री जयपुर 102. **अकाझिरी :** पं. जयेशजी शास्त्री जयपुर 103. **बेड़िया :** पं. विनोदजी शास्त्री जयपुर 104. **कोलारस (आदिनाथ मंदिर) :** पं. अनुरागजी शास्त्री जयपुर 105. **धरमपुरी :** पं. निशंकजी शास्त्री जयपुर 106. **अमायन :** पं. विकासजी शास्त्री जयपुर 107. **गोहद :** पं. भावेशजी

शास्त्री जयपुर 108. **इंदौर (नरसिंगपुरा) :** पं. अभिलाषजी शास्त्री व पं. अचलजी शास्त्री जयपुर 109. **छिंदवाड़ा (गंज):** पं. वैभव मंगलार्थी 110. **करेली :** पं. पीयूष मंगलार्थी 111. **आरोन :** पं. सुमित व पं. अंकित मंगलार्थी।

राजस्थान प्रान्त ह्न १. **जयपुर :** डॉ. श्रेयांसकुमारजी शास्त्री २. **जयपुर :** पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री 3. **कोटा (इन्द्र विहार) :** पं. कमलेशजी मौ 4. **अलवर (मु. मंडल):** पं. चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा, 5. **पिडावा :** वि. पुष्पा बहन खण्डवा 6. **अजमेर :** पं. गुलाबचन्दजी बीना 7. **उदयपुर (मु. मंडल)** : पं. शिखरचन्दजी बीना 8. **उदयपुर (सेक्टर-11) :** पं. देवेन्द्रजी सिगोड़ी 9. **उदयपुर (सेक्टर-3) :** पं. विकासजी शास्त्री बानपुर 10. **उदयपुर (गायरीयावास) :** पं. रविजी ललितपुर 11. **बून्दी (मलाह शाहजी का मन्दिर) :** पं. धर्मचन्दजी जयथल 12. **बून्दी (नैनवा रोड़) :** पं. संजयजी हरसौरा रावतभाटा 13. **जौलाना :** पं. प्रमोदजी तामटीया 14. **रावतभाटा :** पं. अरूणजी लालोनी 15. **जयपुर (आदर्शनगर) :** पं. विनोदजी जबेरा 16. **अलवर :** पं. अजितजी शास्त्री अलवर 17. **भरतपुर :** पं. अरूणजी बण्ड अलवर 18. **रामगढ़ (अलवर) :** पं. प्रेमचन्दजी अलवर 19. **जयपुर (वरूणपथ) :** पं. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर 20. **जयपुर (सिविल लाईन) :** पं. ताराचन्दजी सोगाणी जयपुर 21. **भीलवाड़ा :** डॉ. मानमलजी कोटा 22. **जयपुर-बड़े दीवानजी (राज.जैन सभा) :** डॉ. दीपकजी जैन 23. **कानोड :** पं. शंशाकजी शास्त्री सागर 24. **किशनगढ़ :** पं. तपिशजी शास्त्री उदयपुर 25. **जयपुर (जवाहरनगर) :** पं. परेशजी शास्त्री जयपुर 26. **अलीगढ़ :** पं. जगदीशजी पवार उज्जैनीया 27. **भीण्डर :** पं. संजयजी लोहरीया 28. **लुणदा :** पं. आशीषजी शास्त्री अरथुना 29. **सेमारी :** पं. मथुरालालजी इन्दौर 30. **कुरावड़** : पं. कमलेशजी बण्डा 31. **प्रतापगढ़ (मुमुक्षु मंडल)** : पं. मीठालालजी कलिंजरा 32. **कुशलगढ़** : पं. चैतन्यजी बाँसवाड़ा 33. **बिजौलिया :** पं. निर्मलकुमारजी सागर ३४. **भवानीमण्डी :** डॉ. धनकुमारजी शास्त्री ३५. **विराटनगर :** पं. वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री ३६. **अलवर :** पं. अजितकुमारजी शास्त्री ३७. **दौसा :** पं. प्रमोदजी शास्त्री टीकमगढ ३८. **दौसा :** पं. संजयजी शास्त्री भोगांव ३९. **कोटा (मुमुक्षु आश्रम) :** पं. रतनचन्दजी शास्त्री ४०. **रूपहेडीकला :** पं. पद्माकरजी मुंजोले ४१. **लालसोट :** पं. विवेकजी शास्त्री महाजन ४२. **रावतभाटा :** पं. रविकुमारजी शास्त्री विदिशा ४३. **जयपुर (बगरुवालान) :** डॉ. विमलकुमारजी शास्त्री ४४. **निम्बाहेडा :** पं. सुनीलकुमारजी शास्त्री नाके ४५. **जयपुर :** पं. राजेशजी शास्त्री शाहगढ ४६. **दौसा:** पं. अध्यात्मप्रकाशजी कोलारस 47. **कोटा (गिरधरपुरा) :** पं. मनीषजी शास्त्री पिडावा ४८. **जयपुर (सोनियान मंदिर) :** पं. अनिलजी शास्त्री सोजना ४९. **जयपुर :** पं. विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन ५०. **जयपुर :** डॉ. भागचन्दजी शास्त्री 51. **जयपुर :** पं. नीतेशजी शास्त्री डडूका 52. **जयपुर :** पं. श्रुतेशजी शास्त्री सातपुते 53. **जोधपुर :** पं. राजकमलजी दोशी 54. **बांसवाड़ा :** पं. नितुलजी शास्त्री भिण्ड 55. **उदयपुर (मण्डी की नाल) :** पं. खेमचन्दजी शास्त्री 56. **वनस्थली (विद्यापीठ) :** पं. शिखरचंदजी निवई एवं पं. मोहितजी शास्त्री जयपुर 57. **जयथल :** पं. सौरभजी शास्त्री जयपुर 58. **बनियानी :** पं. शनि शास्त्री जयपुर 59. **टोकर :** पं. दीपेशजी शास्त्री जयपुर 60. **साकरोदा :** पं. आशीषजी शास्त्री सिलवानी 61. **लाम्बाखोह :** पं. सौरभजी शास्त्री जयपुर 62. **बीकानेर :** पं. शौर्यजी बाँसवाड़ा 63. **उदयपुर** (से 5) **:** पं. अजयजी पहाड़िया 64. **बोहेड़ा :** पं. जयदीपजी शास्त्री जयपुर 65. **झालानाजी का बराना :** पं. रॉकी गाँधी बाँसवाड़ा 66. **झालरापाटन :** पं. राजूभाई कानपुर 67. **अजमेर :** पं. अश्विनजी शास्त्री एवं अभिषेकजी बाँसवाड़ा 68. **लाखेरी :** पं. अतुलजी शास्त्री जयपुर 69. **सीकर :** पं. वीरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर 70. **चित्तौड़गढ़ :** पं. मयंकजी बाँसवाड़ा 71. **वल्लभनगर :** पं. रजित शास्त्री जयपुर। **जयपुर :** उपरोक्त के अतिरिक्त 23 विद्वान जयपुर के विभिन्न उपनगरों में रहेंगे।

महाराष्ट्र प्रान्त ह्न 1. **मुम्बई (घाटकोपर) :** ब्र. नन्हेलालजी सागर 2. **मुम्बई (एवरशाइन नगर) :** पं. विपिनजी शास्त्री आगरा 3. **मुम्बई (मलाड) :** पं. संजयजी जेवर ४.**मुम्बई (जोगेश्वरी) :** पं. अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल 5. **मुम्बई :** पं. परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल 6. **सांगली :** पं. महावीरजी पाटील 7. **मुम्बई (दहीसर):** पं. कमलकुमारजी मलैया जबेरा 8. **मुम्बई (मीरा रोड़)** : पं. कमलचन्दजी पिड़ावा 9. **मुम्बई (भुलेश्वर) :** डॉ. महेशजी भोपाल 10. **मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** पं. ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई 11. **मुम्बई (दादर) :** पं. सुनीलजी धवल 12. **मुम्बई (चेम्बुर) :** पं. सुमेरचन्दजी बेलोकर मुम्बई 13. **पुणे (स्वा. मंडल) :** पं. अभयजी शास्त्री खैरागढ़ 14. **पुणे (जैन बोर्डिंग):** पं. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई 15. **परभणी :** पं. कीर्तिकुमारजी गोरे 16. **जलगांव :** पं. बाबूभाई मेहता फतेपुर 17. **हिंगोली :** पं. नागेशजी शास्त्री पिड़ावा 18. **नागपुर (इतवारी) :** पं. सुदीपजी जैन बीना 19. **मलकापुर :** पं. सुरेन्द्रजी उज्जैन 20. **वाशिम :** पं. सचिनजी खनियांधाना 21. **सोलापुर (बुबने) :** पं. रवीन्द्रजी काले कारंजा 22. **बोरी :** पं. संतोषजी सावजी 23. **कारंजा (लाड) :** पं. विनोदजी गुना 24. **पंढरपुर :** पं. सत्येन्द्रजी मौवाले 25. **सेनगाँव :** पं. शीतलजी हेरवाडे कोल्हापुर 26. **मुम्बई :** डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई 27. **देवलाली :** पं. सुबोधजी सिवनी 28. **सेलु :** पं. जीवराजजी जैन नाशिक 29. **जयसिंगपुर :** पं. विजयसेनजी पाटील 30. **नागपुर :** पं. जितेन्द्रजी राठी 31. **चिखली :** पं. संदीपजी चौगुले व्हन्नुर 32. **अकलुज :** पं. नन्दकिशोरजी माँगुलकर 33. **साडवली :** पं. संयमजी शेटे जयपुर 34. **औरंगाबाद :** पं. चिंतामणजी भूस जयपुर 35. **मालशिरस :** पं. अक्षयजी वाडकर सांगली 36. **पुणे (चिंचवड़) :** पं. वीरेन्द्रजी हट्टी, बाँसवाड़ा 37. **वरूड :** पं. आतिशजी जोगी जयपुर 38. **डासाला :** पं. मिथुनजी पुदाली जयपुर 39. **रिसोड :** पं. प्रकाशजी उकलकर जयपुर 40. **वर्धा :** पं. निशांतजी जैन बाँसवाड़ा 41. **अंबड़ :** पं. अभिषेकजी जोगी नाशिक 42. **अक्कलकोट :** पं. अजयजी गोरे फालेगाँव 43. **मालेगाँव :** पं. अमोल पाटील बांसवाड़ा 44. **फालेगाँव :** पं. अनेकान्तजी जैन बाँसवाड़ा 45. **वसमत :** पं. रवीन्द्रजी मसलकर अंबड 46. **धरनगाँव** : पं. निशान्तजी पाटील बाँसवाड़ा 47. **पानकन्हेरगाँव :** पं. संदेशजी बोरालकर जयपुर 48. **अणदुर :** पं. ऋषिकेशजी घोडके जयपुर 49. **यवतमाल :** पं. विजयजी राऊत रिठद 50. **बेलोरा :** पं. जयेशजी रोकडे जयपुर 51. **औरंगाबाद :** पं. संजयजी शास्त्री राउत ५२. **सोलापुर :** पं. विक्रान्तजी शहा 53. **मालेगांव :** पं. संजयजी महाजन 54. **नागपुर :** पं. विरागजी शास्त्री 55. **नागपुर :** पं. मनीषजी सिद्धान्त 56. **देउलगांवराजा :** पं. प्रसन्नजी शेटे 57. **देउलगांवराजा :** पं.विजयजी आह्वाने 58. **देउलगांवराजा :** पं. उमाकान्तजी बण्ड 59. **देउलगांवराजा :** पं. सत्येन्द्रजी मिरकुटे 60. **मुम्बई (कांदीवली) :** किशोरजी धोंगडे 61. **शिरडशहापुर :** पं. प्रशांतजी शास्त्री राजुरा 62. **मुम्बई :** पं. सोनू शास्त्री पोरसा 63. **परभणी** : पं. संतोषजी शास्त्री उखलकर 64. **परभणी** : पं. प्रशांतजी शास्त्री उखलकर 65. **सोलापुर** : पं. विजयजी कालेगोरे 66. **सेलू** : पं. अनंतजी विश्वंभर 67. **सोलापुर :** पं. प्रशांतजी मोहरे 68. **दानोली:** पं. किरणजी पाटील 69. **पाथर्डी :** पं. विवेकजी सातपुते 70. **मुम्बई :** पं. जितेन्द्रजी शास्त्री 71. **मुम्बई :** विदुषी मुक्ति जैन ७२. **शिरडशहापुर :** पं. महेन्द्रजी मिरकुटे आसेगाँव 73. **एलोरा :** पं. गुलाबचन्दजी बोरालकर 74. **कारंजा:** पं. आलोकजी शास्त्री, 75. **भिगवण :** सौ. लताजी रोम अकोला, 76. **वाशिम (सैतवाल मंदिर) :** पं. केशवरावजी जैन नागपुर 77. **धरणगाँव :** पं. निशांत पाटील बाँसवाड़ा 78. **कन्नड :** पं. सुकुमारजी पाटील बाँसवाड़ा 79. **विहीगाँव :** पं. सतीशजी गवारे बाँसवाड़ा 80. **मुंबई (वसई) :** पं. समकितजी बाँसवाड़ा 81. **गजपंथा (नाशिक) :** पं. पंकजजी संघई हिंगोली 82. **देऊलगाँवराजा :** पं. प्रसन्नजी शेटे नागपुर 83. **मालशिरस :** पं. दीपकजी मजलेकर कोल्हापुर 84. **फालेगाँव :** पं. अनेकांतजी बाँसवाड़ा 85. **सदाशिवनगर :** पं. श्रेणिकजी कोरेगाँवे बाँसवाड़ा 86. **सोलापुर (कासार मंदिर) :** पं. सतीशजी बोरालकर शास्त्री डोणगाँव 87. **वाशी (मुंबई) :** पं. संयम मंगलार्थी 88. **ताडदेव (मुंबई) :** पं. ज्ञायक मंगलार्थी 89. **औरंगाबाद :** पं.अभिषेक व पं. पवन शेंडे मंगलार्थी

उत्तरप्रदेश प्रान्त ह्न 1. **इटावा :** पं. प्रकाशदादा 'ज्योतिषाचार्य' मैनपुरी 2. **रुडकी :** पं. प्रकाशदादा झांझरी उज्जैन 3. **कांधला :** पं. अनिलजी (इंजि.) भोपाल 4. **अलीगढ़ (मंगलायतन) :** पं.

दिनेशभाई शहा 5. **अलीगढ़ (मंगलायतन) :** डॉ. उज्जवला बहन शहा 6. **मैनपुरी :** पं. चन्दूभाई मेहता, फतेपुर 7. **खतौली :** पं. मनीषजी शास्त्री 8. **बानपुर :** पं. रमेशजी 'मंगल' सागर 9. **मुज्जफरनगर :** पं. महेन्द्रजी भिण्ड 10. **ललितपुर :** पं. अजितजी फिरोजाबाद 11. **कुरावली :** पं. अशोकजी उज्जैन 12. **मेरठ (तीरगरान) :** पं. जागेशजी शास्त्री जबेरा 13. **बड़ौत :** पं. शीतलप्रसादजी पाण्डे उज्जैन 14. **रानीपुर :** पं. निर्मलकुमारजी एटा 15. **गुरसराय :** डॉ. भरतजी उज्जैन 16. **बांधा :** ब्र. सुधाबहन एवं पं.आकेशजी छिन्दवाड़ा 18. **सहारनपुर :** पं. पदमजी अजमेरा रतलाम19. **ललितपुर :** पं. भानुकुमारजी शास्त्री 20. **धामपुर :** पं. प्रदीपजी शास्त्री खतौली 21. **सासनी :** पं. सुधीरजी शास्त्री जबलपुर 22. **मेरठ (गेंदालालजी मंदिर) :** पं. शाकुलजी शास्त्री 23. **खतौली :** पं. सोनू शास्त्री फिरोजाबाद 24. **झांसी :** पं. गजेन्द्रजी शास्त्री भरतपुर 25. **भोगाँव :** पं. किशनमलजी कोलारस 26. **मड़ावरा :** पं. हुकमचंदजी सिंघई राघौगढ़ 27. **शिकोहाबाद :** पं. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर 28. **बरेली :** पं. मनोजजी मुजफ्फरनगर 29. **कायमगंज :** पं. पदमजी जैन कोटा 30. **करहल :** पं. सत्येन्द्रजी बीना 31. **धामपुर :** पं. दीपकजी शास्त्री जयपुर 32. **कैराना :** पं. संदीपजी शास्त्री भिटोनी 33. **गंगेरु :** पं. आशीषजी शास्त्री मड़ावरा 34. **बावली :** पं. दीपकजी शास्त्री भिंड 35. **मेरठ :** पं. नमन मंगलार्थी।

गुजरात प्रान्त ह्न 1. **अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** पं. अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन 2. **अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पं. राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा 3. **अहमदाबाद (मणीनगर) :** पं. रीतेशजी शास्त्री डडुका 4. **अहमदाबाद (पालडी) :** पं. विवेकजी छिंदवाड़ा 5. **अहमदाबाद (ओढव) :** पं. मांगीलालजी कुरावली 6. **अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** पं. सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ़ 7. **अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पं. अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी 8. **अहमदाबाद (सरसपुर) :** पं. नितेशजी शास्त्री जयपुर 9. **हिम्मतनगर :** पं. श्रेणिकजी जबलपुर 10. **राजकोट :** पं. वजुभाई अजमेरा एवं पं. सुनीलजी जैनापुरे 11. **दाहोद :** वि. पुष्पाबेन एवं ज्ञानधारा बेन उज्जैन 12. **रखियाल :** पं. महेशजी भण्डारी भोपाल 13. **बड़ौदा :** पं. डॉ. महावीरप्रसादजी उदयपुर 14. **तलोद :** पं. जयकुमारजी बारां 15. **मोरबी :** पं. सुनीलजी बारां 16. **वापी :** पं. वरूणजी शास्त्री मुम्बई **१७. दाहोद :** पं. राकेशजी दोशी परतापुर 18. **अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** पं. ध्रुवेशजी शास्त्री 19. **अहमदाबाद (बहेरामपुरा) :** पं. नवीनजी शास्त्री अहमदाबाद 20. **दाहोद :** पं. वीरेन्द्रजी शास्त्री डडूका 21. **पोरबंदर :** पं. सचिनजी शास्त्री जयपुर 22. **जैतपुर :** पं. श्रेयांसजी शास्त्री जयपुर 23. **नरोड़ा :** पं. अनेकांतजी शास्त्री जयपुर।

अन्य प्रान्त ह्न 1. **कोलकाता :** पं. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर 2. **बेलगाँव :** ब्र. अचलजी ललितपुर 3. **बैंगलौर :** पं. देवेन्द्रजी बिजौलिया 4. **पुरूलिया :** पं. अविरलजी विदिशा 5. **कोचीन :** पं. अमोलजी बाँसवाड़ा 6. **दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) :** पं. कस्तूरचन्दजी विदिशा 7. **चेन्नई (तिरुमलै) :** पं. जम्बूकुमारजी जैन 8. **रानीपुर (हरिद्वार) :** पं. मनीषजी 'कहान' खडैरी 9. **पोन्नुर :** पं. बाँके बिहारी मिश्रा10. **बैंगलोर (विल्सनगार्डन) :** पं. किशोरजी शास्त्री 11. **बेलगांव :** पं. महावीरजी बखेडी 12. **रेवाडी (हरियाणा) :** पं. कैलाशचन्दजी शास्त्री मोमासर 13. **धारवाड :** पं. भरतेशजी शास्त्री शेडवाल 14. **चम्पापुर :** पं. विमोशजी शास्त्री खडैरी 15. **चम्पापुर :** पं. सोनलजी शास्त्री जबेरा 16. **मन्डया (कर्नाटक) :** पं. अनन्तराजजी शास्त्री 17. **हैदराबाद :** पं. नयनजी शास्त्री 18. **लुधियाना (पंजाब):** पं. निखिलजी शास्त्री एवं पं. राजकुमारजी 19. **बीजापुर (कर्नाटक) :** पं. रमेशजी शास्त्री शिरहट्टी 20. **कोलकाता :** पं. अभिनयजी शास्त्री जबलपुर 21. **बेलगाँव :** पं. संतोषजी शास्त्री जयपुर एवं पं. एकत्वजी शास्त्री जयपुर 22. **पोन्नूर :** पं. अकलंक मंगलार्थी।

दिल्ली : यहाँ डॉ. वीरसागरजी, डॉ. सुदीपजी, **दिल्ली (विकासनगर) :** पं. अनाकुल मंगलार्थी आदि **४३ ख्यातिप्राप्त विद्वान** प्रवचनार्थ निश्चित किये गये हैं।